3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

बाल शहीदों की गौरव गाथा

हरिकिशन

●रविचंद्र गुप्ता

हरिकिशन का जन्म जून सन् १९०९ में मर्दान, गल्लाधर (अब पाकिस्तान) में हुआ था। गुरुदास मल ने अपने बेटों–हरिकिशन एवं भगतराम को बचपन से ही देश भारत के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने की शिक्षा दी। उन्होंने उन्हें साहसी बनाया। अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष के लिए तैयार किया। उन्हें पिस्टल से निशाना साधना भी सिखाया। हरिकिशन का विश्वास था कि अंग्रेजों से भारत को शक्ति से ही मुक्त कराया जा सकता है। भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरू को जब अदालत में डंडों व घूँसों से पीटा गया तो हरिकिशन का खून खौल उठा। उसने इसका बदला लेने की ठान ली २३दिसम्बर, १९३० को लाहौर में पंजाब विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह था। इसके अध्यक्ष पंजाब के तत्कालीन गवर्नर ज्यो. फ्रे. डी. मेंट मोरंसी थे। सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन प्रमुख वक्ता थे।

गवर्नर जब सभा भवन में अंग–रक्षकों के साथ हरिकिशन के नजदीक से निकल रहा था तो उसने पीछे की सीट पर खड़े होकर निशाना लगाया। गवर्नर घायल तो हुआ लेकिन बच गया। हरिकिशन ने भागने का प्रयत्न किया लेकिन पकड़ा गया। हरिकिशन को जेल में अन्य साथियों के नाम जानने हेतु कठोर यातनाएँ दी गईं। उसने भगत सिंह से मिलने हेतु आज्ञा न मिलने पर अन्न जल त्याग दिया। आखिर उनकी मुलाकात कराई गई। ९ जून, १९३१ को हरिकिशन को फाँसी पर लटकाया गया। उसके बाद हरिकिशन के पिता को सरकार ने अनेक अभियोगों में फँसा दिया। १५ दिन बाद ही हरिकिशन के पिता गुरुदास मल ने अदालत में प्राण त्याग दिए। हरिकिशन का पूरा परिवार देश पर कुर्बान हो गया। सुभाष को रहमत अली नाम के जिस व्यक्ति ने अफगान सीमा पार कराई थी वह हरिकिशन का छोटा भाई भगतराम ही था। हरिकिशन केवल बीस वर्ष की आयु में ही मातृ–भूमि के ऋण से उऋण हो गया।

●दिल्ली